

## शहरी भूमिअभिलेख पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला

**स्रोत: पी.आई.बी.**

हाल ही में ग्रामीण विकास मंत्रालय ने "शहरी भूमिअभिलेखों के सर्वेक्षण -पुनःसर्वेक्षण में आधुनिक तकनीकों के उपयोग " पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया।

- **इसने डिजिटल इंडिया भूमिअभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम (DILRMP)** के तहत भूमिअभिलेखों के डिजिटलीकरण की प्रतबिद्धता की पुष्टि की।
- **100 से अधिक शहरों/कस्बों** में शहरी भूमि रिकॉर्ड बनाने के लिये राष्ट्रीय भू-स्थानिक ज्ञान-आधारित शहरी आवास भूमि सर्वेक्षण (नक्शा) नामक एक पायलट कार्यक्रम प्रारंभ किया गया।
- भूमिअभिलेख वननिर्माण में ड्रोन और 3D इमेजरी के साथ एरियल फोटोग्राफी के उपयोग पर प्रकाश डाला गया है।
- **DILRMP** (पूर्ववर्ती **राष्ट्रीय भूमिअभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम**) एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है जो 1 अप्रैल, 2016 से प्रभावी है, इसका 100% वित्तपोषण केंद्र द्वारा किया जाता है।
  - इसका उद्देश्य एक आधुनिक, व्यापक और पारदर्शी रिकॉर्ड प्रबंधन प्रणाली विकसित करना है।
  - **DILRMP** के अंतर्गत नवीन पहलों में शामिल है:
    - **वशिष्ट भूमि पारसल पहचान संख्या (ULPIN)** या भू-आधार (भू-नदिदेशांक के आधार पर प्रत्येक भूमि पारसल के लिये 14 अंकों की अल्फा-न्यूमेरिक वशिष्ट आईडी)
    - राष्ट्रीय सामान्य दस्तावेज पंजीकरण प्रणाली (NGDRS) या ई-पंजीकरण (कार्यों/दस्तावेजों के पंजीकरण हेतु एक समान प्रक्रिया अपनाना)।

अधिक पढ़ें: [भूमिअभिलेखों का डिजिटलीकरण](#)